रंगों में रामायण

-डॉ. दलजीत कौर

रामायण भारतीय जीवन दर्शन, मानवीय नैतिक मूल्यों तथा परंपराओ का अक्षय कोश और सांस्कृतिक इतिहास का अत्यंत महत्वपूर्ण तत्व है, किसी भी देश की समृद्ध आध्यात्मिक संस्कृति का अनुमान उस देश के महान साहित्य के भंडार से लगाया जा सकता है, जो युगों-युगों तक सूर्य की किरणों की भोति आने वाली हर पीढ़ी को सन्मार्ग की ओर अग्रसर होते रहने की प्रेरणा देता है।

रामायण भी इसी प्रकार का पावन ग्रंथ है, जिसका प्रकाश भारत के प्राय: हर घर के प्रांगण को आलोकित कर रहा है, यह संसार का संभवत: प्राचीनतम तथा हमारे देश का सर्वाधिक लोकप्रिय महाकाव्य है, जिसकी व्यापकता का प्रचार दक्षिण-पूर्वी एशिया में इंडोनेशिया तक हुआ. प्राचीनता के विषय में विद्धानों में मतभेद हैं क्योंकि विविध स्थानों पर रामायण की रचना विभिन्न दृष्टिकोणों से की गयी। अत: इसकी कथा-शैली पर तर्कसंगत विचार कर विद्धानों ने यह खोजने का प्रयास किया है कि इक्ष्वाकु वंश, जिसमें राम का जन्म हुआ था, कितना प्राचीन हो सकता है। इसी प्रकार राजा जनक का समय तथा लंकाधिपति रावण का समय कितना प्राचीन हो सकता है?

कुछ विद्वानों ने दृढ़ता से राम का समय 2850 ईसा पूर्व तथा 1950 ईसा पूर्व के मध्य का माना है। प्रसिद्ध अंग्रेज लेखक पैरगिटर ने समस्त पुराणों का समालोचनात्मक अध्ययन करने के पश्चात् राम का समय 1400 ईसा पूर्व आंका है। कुछ अन्य जर्मन एवं अंग्रेज लेखकों का मत है कि रामायण की कथा को 800 ईसा पूर्व से अधिक प्राचीन नहीं कहा जा सकता। उनके मतानुसार, रामायण में जो दार्शनिक विचार पाये जाते हैं वे वाल्मीकि युग यानी ईसा पूर्व छठी शताब्दी के हो सकते हैं। परंतु उनके इस मत को अधिकांश विद्धान युक्तिसंगत नहीं मानते।

अयोध्या और लंका में 7-8 खंड के भवनों का वर्णन पुरातत्ववेत्ताओं को काल्पनिक लगाता है, क्योंकि मोहनजोदडों में भी उन्हें दो खंड से ऊंचे भवन नहीं मिले। पुरातत्ववेत्ताओं के मतानुसार राम का समय 2000-1500 ईसा पूर्व तथा रामायण की रचना का समय भी इसी के आस-पास हो सकता है।